

गुरु नानक देव जी का प्रकाश परव

प्रलिस के लयल:

[राषुडरपतल](#), [प्रकाश परव](#), [गुरु नानक देव](#), [सखल धरुड](#), [लुदी प्रशासन](#), [नरलगुण शाखा](#), [कबीर दास](#), [सखल गुरु अरजुन](#), [गुरु अंगद](#), [भकुतल आंदोलन](#), [करतारपुर कूरडोर](#), [सवरुण डंदरल](#) ।

डेनुस के लयल:

गुरु नानक की शकुषाएँ और आज के वशलव डें उनकी प्रसंगकलता ।

[सरोत: पी.आई.बी](#)

करुा डें कुडुडु?

हाल ही डें डारत के [राषुडरपतल](#) ने [गुरु नानक देव जी के प्रकाश परव](#) की पूरव संधुडा पर नलगरकुडुडु को डुधलई दी तथल उनसे उनकी शकुषलओुडु को अपनलने तथल सडलज डें [एकता और सडलनता](#) को डुदलवल देने कल आग्रह कडलल ।

- प्रकाश परव [सखल धरुड](#) के संसुथलपक और [सडलज सुधलरक](#) गुरु नानक देव जी की जडुतुडु पर डनलडल जलतल डु ।
- डसे प्रकाश परव के रूड डें डसललडल डनलडल जलतल डु कुडुडुडु उनुडुने लुगुडु को [अंधकलर](#) से प्रकाश की ओर ले जलने कल प्रडलस कडलल थल ।

गुरु नानक देव के वषलड डें डुखुड तथुड कुडल डुडु?

- **जनुड और प्रलरंभकल डलवन:** गुरु नानक (1469-1539) कल जनुड वरुष 1469 डें डलकुसुतलन डें ललहूर के डलस [तलवंडी गलँव](#) डें हुआ थल ।
 - वल 10 [सखल गुरुओुडु](#) डें से प्रथड थु ।
 - उनुडुने [लुदी प्रशासन](#) डें सुलतलनपुर डें कलरक के रूड डें करुड कडलल ।
- **आधुडलतडकल रहसुडुदुधलटन:** ललगडुडु 30 वरुष की आयु डें, गुरु नानक कु एक गहन आधुडलतडकल अनुडुव हुआ और [कलली डेन](#) नदी के डलस उनकल ईशुवर से सीधल सलकुषलतुकर हुआ, जसलके करलण उनुडुने घुषणल की कल "न तु कुडुई हदुडु डु और न ही कुडुई डुसलडलन ।"
- **दलरशनकल प्रेरणल:** वे [भकुतल आंदोलन](#) की [नरलगुण शाखा](#) के सडरथक थु और [कबीर दास](#) से प्रडलवतल थु । उनुडुने "नलड जडनल" जसे आधुडलतडकल अभुडलसुडु डेर जुर दडलल, डलनी ईशुवर की उडसुथतलकल अनुडुव करने के लडल ईशुवर के नलड कल दुहरलव ।
- **शकुषलएँ और डलतुरलएँ:** उनुडुने अपने डुसुलडल सलथल डरदलनल के सलथ अपना संदेश डैललते हुए डुरे डलरत और डधुड डूरुव डें वुडलडक रूड से डलतुरल की ।
 - उनके दुवलरल रकतल डजनुडु को डलँकडुडु [सखल गुरु अरजुन देव](#) ने वरुष 1604 डें [आदलगुरंथु](#) डें शलडलल कडलल थल ।
- **सडुदलड और वरलसत:** वल [करतलरपुर](#) डें डस गए और डहलल [सखल सडुदलड सुथलडतल कडलल](#) जलु शषलड एक सलथ रहते थु तथल डुडल करते थु ।
- उनुडुने सडुदलड कल नेतुतुव करने के लडल [गुरु अंगद](#) (डलई लहनल) कु अपना उतुतरलधकलरुडी नडुकुत कडलल ।

भकुतल आंदोलन

- भकुतल आंदोलन ने डुकुष प्रलडतल के लडल वुडकुतगलत रूड से कलडतल सरुवुकुडु ईशुवर के प्रतल [भकुतलडूरुण सडरुडण कल सडरुथन कडलल](#) ।
- **भकुतल की अवधलरणल:** [शुवेतलशुवतर उडनषलद](#) डें भकुतल कल अरुथ केवल कसुडु डु डुरडलस डें डलगुीदलरुडु, सडरुडण और डुरेड डु ।
 - डगवद [गुीतल](#) ईशुवर डें अदुड वशलवलस ररखने के डहतुतुव डर डल देतुी डु ।
- **उतुडतुतल:** भकुतल आंदोलन [दकुषणल डलरत डें 7 वुी से 8 वुी शतलडुदी](#) के दुरलन [नडनलरुडु](#) (शवल के भकुतल) और [अलवलरुडु](#) (वषलणु के भकुतल) दुवलरल शुुरु हुआ ।

- यह आंदोलन दक्षिण भारत से उत्तर भारत तक फैल गया, जिसमें संतों द्वारा अपनी शक्तिशाली संघर्षण के लिये स्थानीय भाषाओं के प्रयोग से सहायता मिली।
- सामाजिक और धार्मिक सुधार: भक्तिसंतों ने जाति, वर्ग या धर्म की परवाह किये बिना सभी मनुष्यों की समानता का उपदेश दिया।
- प्रमुख भक्तिसंत: भक्तिसंतों से जुड़े संतों में रामदास, मीराबाई, तुलसीदास, नामदेव, तुकाराम, रामानुज, कबीर, नानक और अन्य शामिल हैं।
- कबीर और गुरु नानक ने हद्वि तथा इस्लामी दोनों परंपराओं से प्रेरणा लेकर हद्विओं व मुसलमानों के बीच की खाई को पाटने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

गुरु नानक की शिक्षाएँ क्या हैं?

- एक ओंकार (एकेश्वरवाद): गुरु नानक ने इस बात पर बल दिया कि ईश्वर एक है जो सर्वव्यापी है और सभी मनुष्य उसी एक ईश्वर की संतान हैं।
- नाम जप (ईश्वर का नाम जपना): उन्होंने अंधकार को दूर करने, शांति और खुशी लाने तथा दया एवं प्रेम के मूल्यों को विकसित करने के लिए ईश्वर के नाम के स्मरण और जप करने को महत्त्व दिया।
- ईमानदारी से कार्य करना: गुरु नानक ने ईमानदारी से कार्य करने के साथ उचित साधनों के माध्यम से कमाई करने के महत्त्व पर बल दिया। उन्होंने ईमानदारी से किये गए कार्य को संतुष्टि की भावना और आत्मविश्वास का पूरक बताया।
- वंद छको (वतिरण और सेवा): उन्होंने सामाजिक समानता और करुणा को बढ़ावा देने के क्रम में अपनी आय के एक भाग को ज़रूरतमंदों के बीच बाँटने की प्रथा को महत्त्व दिया।
- अन्य धर्मों के प्रति दृष्टिकोण: गुरु नानक सभी धर्मों का सम्मान करते थे और मानते थे कि सभी मनुष्य समान हैं तथा वे धार्मिक मतभेदों के आधार पर नरिणय को अस्वीकार करते थे।
 - वेद, कुरान और बाइबल जैसे ग्रंथों की गहरी समझ के साथ उन्होंने प्रत्येक धर्म के प्रति समान सम्मान को महत्त्व दिया।
- मूर्तिपूजा: नानक ने मूर्तिपूजा को अस्वीकार किया। उनका मानना था कि भगवान को मूर्तियों में नहीं पाया जा सकता है। उन्होंने सखिया का भगवान अनंत है तथा वह मानवीय शब्दों, प्रतीकों या रूपों से परे हैं और उन्हें मानव नरिमति मूर्तियों द्वारा परभाषित नहीं किया जा सकता है।
 - गुरु नानक, भक्तिसंतों की नरिगुण ('नरिका ईश्वर') शाखा के मुख्य प्रस्तावक थे।
- मोक्ष: गुरु नानक का मानना था कि अच्छे कर्म आत्मा को शाश्वत आत्मा में विलीन होने में मदद करते हैं जबकि बुरे कर्म इसमें बाधा डालते हैं।
 - ईश्वर के नाम का ध्यान मोक्ष (जिसका अर्थ है पुनर्जन्म से मुक्ति और ईश्वर के साथ मलिन) की कुंजी है।
- भाईचारा और समानता: गुरु नानक ने जाति, धर्म या वर्ग के आधार पर किसी भी प्रकार के भेदभाव का वरिोध किया।
 - वह सभी लोगों के बीच अंतरनहित समानता में विश्वास करते थे और उपदेश देते थे कि सभी को समान प्रेम और सम्मान मिलना चाहिये।
- भौतिकवाद से अलगव: उन्होंने भौतिक संपत्ति के प्रति आसक्ति के खिलाफ वकालत की तथा एक न्यायपूर्ण एवं आदर्श समाज के नरिमाण के क्रम में आध्यात्मिक विकास के साथ ईश्वर के प्रति समर्पण को प्रोत्साहन दिया।
- महिलाओं के प्रति सम्मान: गुरु नानक ने महिलाओं की समानता और सम्मान को बल देने के साथ उनकी गरिमा एवं उनके साथ समान व्यवहार का समर्थन किया।

गुरु नानक देव जी के अनमोल वचन

- यदि आप अपना मन शांत रख सकें तो आप दुनिया जीत लेंगे।
- केवल वही बोलें जिससे आपको सम्मान मिले।
- अपनी आय के दसवें हिस्से को दान करना चाहिये तथा अपने समय के दसवें हिस्से को ईश्वर की भक्ति में लगाना चाहिये।
- हमेशा दूसरों की मदद करने के लिए तैयार रहें क्योंकि जब आप किसी की मदद करते हैं तो भगवान आपकी मदद करते हैं।
- केवल वही व्यक्ति ईश्वर पर विश्वास कर सकता है जो स्वयं पर विश्वास है।

सखि गुरु और उनके प्रमुख योगदान		
गुरु	अवधि	प्रमुख योगदान
गुरु नानक देव	1469-1539	सखि धर्म के संस्थापक; गुरु का लंगर शुरू किया (सामुदायिक रसोई); बाबर के समकालीन; 550 वीं जयंती करतारपुर गलियारे के साथ मनाई गई।
गुरु अंगद	1504-1552	गुरु-मुखी लिपि का आविष्कार; गुरु का लंगर (सामुदायिक रसोई) की प्रथा को लोकप्रिय बनाया।
गुरु अमर दास	1479-1574	आनंद कारज विवाह की शुरुआत की, सती प्रथा और पर्व प्रथा को समाप्त किया, अकबर के समकालीन थे।
गुरु राम दास	1534-1581	वर्ष 1577 में अमृतसर की स्थापना की; स्वर्ण मंदिर का नरिमाण शुरू किया।
गुरु अर्जुन देव	1563-1606	वर्ष 1604 में आदिग्रंथ की रचना की; स्वर्ण मंदिर का नरिमाण पूरा किया गया; जहाँगीर द्वारा इसका नरिमाण कराया गया।
गुरु हरगोबिंद	1594-1644	सखियों को एक सैन्य समुदाय में परिवर्तित किया; अकाल तखत (सखि धर्म की धार्मिक

		सत्ता का मुख्य केंद्र) की स्थापना की; जहाँगीर और शाहजहाँ के वरिद्ध संघर्ष कथि।
गुरु हर राय	1630-1661	औरंगजेब के साथ शांति को बढ़ावा दिया; धर्मप्रचार के कार्यों पर ध्यान केंद्रित कथि।
गुरु हरकशिन	1656-1664	सबसे युवा गुरु; इस्लाम वरिधी ईशानदि के संबंध में औरंगजेब द्वारा इन्हें अपने समक्ष उपस्थिति होने का आदेश दिया गया।
गुरु तेग बहादुर	1621-1675	आनंदपुर साहबि की स्थापना की।
गुरु गोबदि सहि	1666-1708	वर्ष 1699 में खालसा पंथ की स्थापना की; इन्होंने एक नया संस्कार "पाहुल" (Pahul) शुरू कथि, ये मानव रूप में अंतमि सखि गुरु थे और इन्होंने 'गुरु ग्रंथ साहबि' को सखिों के गुरु के रूप में नामित कथि।

नषिकरष:

एकता, समानता और भक्तपिर केंद्रति गुरु नानक की शकिषाओं ने सखि धर्म एवं भक्तपिआंदोलन को गहराई से प्रभावति दिया। एकेशवरवाद, सभी धर्मों के प्रतिसममान एवं सामाजकि सुधारों से संबंधति उनके दृषटकिोण से लाखो लोग प्रेरति हुए हैं। शांति, प्रेम एवं सामाजकि न्याय को बढ़ावा देने पर केंद्रति गुरु नानक की शकिषाएँ आज भी परासंगकि है।

दृषटि मुखय परीकषा प्रश्न:

प्रश्न: गुरु नानक की प्रमुख शकिषाओं को बताते हुए समकालीन समाज में उनकी परासंगकिता पर चर्चा कीजयि।

UPSC सविलि सेवा परीकषा, वगित वर्ष के प्रश्न (PYQs)

????????

प्रश्न. नमिनलखिति भक्तपिसंतों पर वचिर कीजयि: (2013)

1. दादू दयाल
2. गुरु नानक
3. त्यागराज

इनमें से कौन उस समय उपदेश देता था/देते थे जब लोदी वंश का पतन हुआ तथा बाबर सत्तारुढ़ हुआ?

- (a) केवल 1 और 3
- (b) केवल 2
- (c) केवल 2 और 3
- (d) केवल 1 और 2

उत्तर: (b)

????

प्रश्न: भक्तपिसाहितय की प्रकृतपि एवं भारतीय संस्कृतपि में इसके योगदान का मूल्यांकन कीजयि। (2021)